फीजी में हिंदी भाषा शिक्षण एवं प्रचार-प्रसार

श्रीमती मनीषा रामरक्खा

मातृभाषा हिंदी

मनुष्य के जीवन में ज्ञान-विज्ञान, आधुनिक तकनीकी का जितना महत्व है, उससे कहीं अधिक महत्व और अनिवार्यता मातृभाषा तथा उससे जुड़ी हुई संस्कृति, सभ्यता, संस्कार, सामाजिक मूल्य और आध्यात्मिकता का ज्ञान प्राप्त करने की है। मातृभाषा व्यक्तित्व को निखारती है।

'माँ व्यक्ति की जननी है तो मातृभाषा व्यक्तित्व की जननी'

प्राणी स्वभाव से अंवेशणशील रहा है। उसे अपने जन्मजात मूल संस्कारों, विचारों, सांस्कृतिक मूल्यों को परिवर्तनशील एवं नए वातावरण का आवरण पहनाकर प्रस्तुत करना अच्छा लगता है। यही कारण है कि गयाना, मॉरीशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम और फीजी जैसे विभिन्न उपनिवेशों में भारतीय संस्कृति पूर्ण समृद्ध एवं पल्लवित है और भारतीयता के गौरव को जाग्रत रखे हुए है। मनुष्य के अपनत्व की पहचान उसकी मातृभाषा से होती है। हिंदू व हिंदुत्व की पहचान है – 'मातृभाषा हिंदी'। **फीजी में हिंदी भाषा को पूर्ण और समान अधिकार प्राप्त है।**

फीजी में प्रवासी भारतीयों की सांस्कृतिक सभ्यता, आचार-विचार को देखकर उतना ही सकून, आनन्द एवं आत्मिक सुख प्राप्त होता है जैसा मानो विशाल भारत भ्रमण से प्राप्त होता है। फीजी एक बहुजातीय देश है। भारतीय सांस्कृतिक विचारधारा और वैदिक संस्कृति की झलक फीजी देश के छोटे से दायरे में देखी जा सकती है। इस दृष्टि से फीजी भारत का एक भू-खण्ड महसूस होता है।

फीजी की भौगोलिक स्थिति– संक्षिप्त परिचय

फीजी प्रशांत महासागर का स्वर्ग कहलाता है। प्राकृतिक सौन्दर्य और विभिन्न सांस्कृतिक सभ्यताओं का सुन्दर समन्वय फीजी की खास विशेषता है। प्रशांत महासागर में, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अमेरिका के बीच द्विपसमूह स्थित है। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व में और न्यू ज़ीलैंड के उत्तर में फीजी द्वीप बसा है। विभाजक 180वीं देशांत रेखा पर फीजी द्वीप है। नव दिवस के सूर्य की पहली किरण प्रथम फीजी धरती को प्रकाशित करती है।

दूर-दूर तक फैले हुए लगभग 844 छोटे-बड़े द्वीप फीजी देश में शामिल हैं, जिनमें से लगभग 100 द्वीपों में आबादी है और इनमें से केवल दो सबसे बड़े और घनी आबादी वाले द्वीप हैं, जो कि वीतीलेवू और वनुआलेवू के नाम से जाने जाते हैं। फीजी देश के सभी बड़े-बड़े शहर वीतीलेव में स्थित हैं। वर्तमान में फीजी की राजधानी सूवा शहर है। सभी देशों के दूतावास भी सूवा में स्थित हैं। फीजी को भूगोलवेत्ता नारियल और मूँगों की दुनिया मानते हैं। फीजी का मौसम सदाबहार है। फीजी के जंगल भी विभिन्न फल-फूलों और कन्द-मूल से भरपूर हैं। माना समय-समय पर राजनैतिक उतार-चढ़ाव आते रहे हैं फिर भी

हिंदी भाषा (फीजीयन एवं अंग्रेज़ी के साथ-साथ) और सांस्कृतिक विचारधारा पूर्णतः सुरक्षित और पल्लवित है।

फीजी के मूल निवासी– परिचय

फीजी देश के आदिवासी लोग काईवीती कहलाते हैं। ये लोग डील-डौल में लम्बे-चौड़े, प्रसन्नचित्त रहने वाले और सबका हार्दिक सत्कार करने वाले हैं। 'वूला' कहकर खुशी से सबका स्वागत करना इनकी संस्कृति है। भारतीय संस्कृति और फीजीयन संस्कृति की कुछ एक बातें मेल खाती हैं जैसे घर आए मेहमान को प्रेम से भोजन कराना, सरल साधारण रहन-सहन और दिल से दूसरों की सहयता के लिए तैयार रहना।

फीजी का 'ईसालेई' नामक गीत बहुत ही मार्मिक भावनाओं से भरा हुआ है। यह गीत बड़ा ही मननोहक और सुन्दर विचारों से भरा हुआ है, जिसमें वापस बुलाने की उत्कंठा और बिदाई का बड़ा ही मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया जाता है। इस गीते में फिर मिलने की भावना को बड़े ही मनोरम ढंग से प्रगट किया जाता है। फीजी द्वीप का प्रकृतिक सौंदर्य और यह 'ईसालेई' गीत दोनों ही हर जाने वाले को फीजी वापस आने को उत्तेजित करते हैं। यह गीत हर सुनने वाले के हृदय में मीठा दर्द छोड़ जाता है।

इनकी भाषा काईवीती है और लेखन के लिए रोमन लिपि काम में लाई जाती है।

फीजी में हिंदी भाषा का इतिहास

फीजी में हिंदी भाषा की नींव डालने का श्रेय उन 463 भारतीयों को जाता है जो 15 मई 1879 को गिरमिट प्रथा (Indentured Agreement) के अंतर्गत, प्रथम जहाज़ लिओनीदास द्वारा फीजी की भूमि पर उतारे गए। 11 नवंबर 1916 तक शर्तबन्द मज़दूर भारत के कोने-कोने से लाकर फीजी की भूमि पर उतारे जाते रहे। इस तरह 37 वर्षों तक लगभग 87 जहाज़ फीजी पहुँचे। इसके बाद गिरमिट प्रथा समाप्त हो गई।

कहाँ जा रहे हैं ? क्यों जा रहे हैं ? यह सब न जानते हुए भी, ये अपने साथ अपने देवी-देवता, अपनी प्रांतीय विचारधाराएँ, अपनी पुरातन तथा बहुमूल्य सांस्कृतिक परँपराओं और अपनी भाषा को साथ लेकर आए थे। उनमें से कुछ-एक, अपने साथ अपने-अपने धर्म ग्रंथ जैसे – रामायण, महारानी का गुटका, गीता, कुरान आदि भी लेकर आए थे।

अधिकांशतः निरक्षक थे पर उनमें अपनी संस्कृति और अपनी भाषा को कायम रखने की ललक थी। शरीर से वे फीजी में रहते थे पर आत्मा हमेशा भारत भूमि की मिट्टी छूने और अपने मुल्क की खबर सुनने के लिए तड़पती थी। अपना कुली काल पूरा करने के बाद अनेक प्रयास करने पर भी जब वे अपने मुक्ल यानि भारत लौटने में असमर्थ रहे तब वे फीजी में ही अपना मुल्क बनाने, भारतीय संस्कृति को जुटाने और उसे समृद्ध बनाने में लग गए। अपना कुली काल पूरा करने पर उन्होंने अपने बल पर छोटे-छोटे केंद्र स्थापित किए और हिंदी तथा हिंदू संस्कृति की शिक्षा देना शुरु किया। शिक्षा का माध्यम हिंदी और संस्कृत हुआ करती थी। पाठ्य पुस्तक थी **'चाणक्य नीति दर्पण'** या जो भी पुस्तक उपल्ब्ध होती थी उसे पाठ्य पुस्तक के रूप में काम में लाया जाता था। उदाहरण के तौर पर पण्डित भगवानदत्त पांडे शर्तबन्दी

में 1884 में फीजी आए थे। कुलीकाल पूरा होने पर वूसी (नसौरी) में अपनी छोटी सी कुटी सी बना रहने लगे और यही कुटी हिंदुओं के लिए धार्मिक शिक्षा केंद्र बन गई। आगे चलकर यही स्कूल का निर्माण किया गया।

फीजी में हिंदी का वर्तमान स्वरूप

आज फीजी में हिंदी भाषा निरंतर तरक्की कर रही है। अन्य भाषाओं (अंग्रेज़ी और फीजियन) के साथ-साथ हिंदी भाषा को फीजी संविधान में समान अधिकार प्राप्त है। व्यवहारिक दृष्टि से भी राष्ट्रीय स्तर पर फीजी में तीनों भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में हिंदी भाषा पूर्ण सुरक्षित उअर समृद्ध है। फीजी में हिंदी के दो रूप देखने को मिलते हैं –

- **पहला है – बोल-चाल की भाषा जिसे फीजी हिंदी** कहते हैं।फीजी हिंदी का अपना एक रूप है, अपना अलग इतिहास है, साथ ही इसमें अद्‌भुत मिठास और सौन्दर्य है। बोलने और समझने में सरल, यहाँ के काईवीती भाई इसका प्रयोग बड़ी आसानी से कर लेते हैं। आवश्यकतानुसार अन्य भाषाओं, खासकर अंग्रेज़ी और फीजियन भाषा के शब्दों का निश्रण भी देखने को मिलता है।
  भारत के अधिकांश प्रांतों के लोगों को फीजी लाया गया जिनकी भाषा-बोलियाँ अलग-अलग थी जैसे भोजपुरी, अवधी, ब्रज, राजिस्थानी, बिहारी, गुजराती, तमिल, तेलगू, मलयालम आदि। इन आने वालों में अधिकतर ग्रामीण इलाके के लोग थे, सीधे-साधे, अनपढ़ जो एक-दूसरे की भाषा को समझते न थे। फीजी हिंदी इन सभी भाषाओं का मिश्रित रूप है।
  कहावत है **'आवश्यकता अविष्कार की जननी है'** अतः जब अपने दुख-सुख में दूसरों को शामिल करने की आवश्यकता हुई तो मिश्रित भाषा **'फीजी बात'** का अविष्कार हुआ। जब भारत से नए कुली आते तो सरदार उनसे कहता **'फीजी बात'** सीखो। यह फीजी बात उस समय भारतीय मज़दूरों के विचारों के आदान-प्रदान का सरल माध्यम थी। अतः फीजी हिंदी एक बोली है (Dialect) जो व्यवहारिक दृष्टि से पूर्ण सक्षम है।
- **दूसरा है – मानक हिंदी –** फीजी सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त और शिक्षा मंत्रालय द्वारा निर्धारित हिंदी पाठ्यक्रम भाषा, मानक हिंदी है। इसका लिखित रूप पूर्णतः देवनागरी लिपि है। यह पाठ्यक्रम कक्षा एक से लेकर कक्षा आठ तक प्राइमरी स्कूलों के लिए और वर्ष नौ (Year nine) से लेकर वर्ष तेरह (Year thirteen) सेकेंडरी स्कूलों के लिए पूर्णतः मानक हिंदी पर आधारित है। मानक हिंदी फीजी में औपचारिक तौर पर काम में लाई जाने वाली सक्षम भाषा है। माना फीजी में मानक हिंदी का स्तर उतना उच्च नहीं जितना भारत में है।

वर्तमान में फीजी सरकार की Language Policy के तहत हिंदी शिक्षण

Education Summit 2000 की रिपोर्ट के सुखावों के तहत मातृभाषा के महत्व को समझा गया और इसके पठन-पाठन पर अधिक ज़ोर दिया जाने लगा है। बच्चों के चरित्र निर्माण में मातृभाषा महत्वपूर्ण भाग अदा करती है। इसी के परिणाम स्वरूप शिक्षा मंत्रालय ने निम्न कदम उठाना अनिवार्य समझा। यह

भी आवश्यक समझा गया कि सभी बच्चों को स्कूली व्यवस्था के अंतर्गत तीन भाषाओं में, विचारों के आदान-प्रदान की योग्यता प्राप्त होनी चाहिए। पहली उसकी अपनी मातृभाषा दूसरी वार्तालापीय भाषा (Conversational Hindi or Fijian) तीसरी अंग्रेज़ी भाषा।

फीजी में शिक्षा मंत्रालय द्वारा भाषा को बढ़ावा देने के लिए निम्न बातों पर ध्यान दिया जा रहा है

- प्राइमरी स्कूलों में – कक्षा एक से कक्षा आठ तक मातृभाषा अनिवार्य कर दी गई है।
- सेकेंडरी स्कूलों में – वर्ष 9 और वर्ष 10 के लिए मातृभाषा अनिवार्य है।
  वर्ष 11, 12 और 13 के बच्चों के लिए – वैकल्पित / चयनात्मक विषय के तौर पर हिंदी पाठ्यक्रम उपलब्ध अहि। पठन-पाठन का माध्यम मानक हिंदी और देवनागरी लिपि है।
- वार्तालापीय (Conversational Hindi) हिंदी पाठ्यक्रम-समस्त प्राइमरी और सेकेंडरी स्कूल के गैर हिंदुस्तानी बच्चों के लिए अनिवार्य है। वार्तालापीय हिंदी शिक्षण का माध्यम रोमन लिपि है। मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान जितनी सक्षमता से कर लेता है यह उतनी ही उन्नति करता है और अपने आप को समर्थ समझता है तथा उसे आंतरिक सकून प्राप्त होता है। इसी आवश्यकता को महसूस करते हुए फीजी सरकार एवं शिक्षा मंत्रालय द्वारा वार्तालापीय हिंदी-फीजियन पाठ्यक्रम को तैयार किया गया। सन् 2000 से सभी स्कूलों में अनिवार्यतः एवं नियमित रूप से इसे कार्यांवित किया गया है।

हिंदी भाषा के माध्यम से जीविका-यापन

हिंदी भाषा के माध्यम से जीविका-यापन के क्षेत्र में निरंतर विस्तार होता जा रहा है –

- 1879 से लेकर 1931 तक स्कूलों में हिंदी के लिए कोई पाठ्यक्रम नहीं था। हिंदी भाषी अपने साथ जो भी हिंदी पुस्तक लाए थे या फिर रामायण, गीता अथवा अन्य प्रकार की धार्मिक पुस्तकों द्वारा हिंदी भाषा के ज्ञान का आदान-प्रदान करते थे।
- अगले तीन दशकों में हिंदी पाठ्यक्रम कुछ व्यवस्थित हुआ। 1969 में 'शिक्षा आयोग' की रिपोर्ट के सुझावों (प्राइमरी स्कूलों में प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो) के आधार पर हिंदी शिक्षण में औपचारिकता आने लगी।
- 1930 से 1970 के वर्षों में कार्य-क्षेत्र अति सीमित था।
- 1970 में फीजी स्वतंत्र हुआ और नीति विशेषज्ञों द्वारा निर्धारित संविधान की धारा के अनुसार कि कोई भी सांसद फीजियन अथवा हिंदी में अपने विचार प्रकट कर सकता है, के तहत मातृभाषा हिंदी-फीजियन पर, शिक्षा के माध्यम से अधिक ध्यान दिया गया।
- इस तरह आज हिंदी का कार्य-क्षेत्र अति विस्तृत है और बढ़ता ही जा रहा है –
  - अध्यापक – समस्त प्राइमरी और सेकेंडरी स्कूल, International School in Fiji

- प्राध्यापक एवं ट्यूटर्स – University of the South Pacific (USP), University of Fiji, Fiji National University (FNU), Fulton College, Corpus Christi-Teachers Training College
- अनुवादक, दुभाषिये, पत्रकार, पंडित, लेखक, प्राइवेट हिंदी ट्यूटर्स आदि
- अनाउंसर्स – फीजी में छः रेडियो स्टेशन्स है जहाँ चौबीस घंटे हिंदी कार्यक्रम चलते है। टी वी चैनल्स – फीजी वन, एफ.बी.सी.
- हिंदी पत्रकार – फीजी में पिछले छः दशक से प्रकाशित होने वाला हिंदी समाचार पत्र – **'शांति दूत'**

आधुनिक तकनीकी का प्रयोग–

सन् 2000 तक फीजी के स्कूलों में हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में 'आधुनिक तकनीकी (Hindi Computer typesetting, Hindi Software) के प्रयोग का चलन बहुत कम था।

शिक्षा विभाग के हिंदी अधिकारियों द्वारा नियमित रूप से कार्यशालाओं के माध्यम से प्राइमरी और सेकेंडरी स्कूलों के समस्त अध्यापकों को हिंदी टाइप सेटिंग की योग्यता उपलब्ध कराने में पूर्ण सहयोग प्रदान किया जाता रहा है।

यहाँ यह बतलाते हुए मुझे खुशी हो रही है कि इस कार्य में सफ़लतापाने के लिए फीजी स्थित भारतीय दूतावास के हिंदी अधिकारियों द्वारा बहुत सहयोग दिया गया। भारतीय दूतावास द्वारा सभी स्कूलों को सहायक सामग्री प्रदान की गई, कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। वर्तमान में हिंदी भाषा के क्षेत्र में आधुनिक तकनीकी का प्रयोग और उसकी सुविधाएँ सर्वत्र उपलब्ध हैं, विभिन्न हिंदी सॉफ्टवेयर्स उपलब्ध हैं।

हिंदी शिक्षण में गैर सरकारी संस्थाओं का योगदान

फीजी सरकार के पूर्ण सहयोग के साथ-साथ हिंदी शिक्षण और हिंदी के प्रचार-प्रसार में अनेक गैर सरकारी संस्थाएँ, धार्मिक संस्थाएँ तन-मन-धन से कार्यरत हैं –

- **हिंदी टीचर्स असोसिएशन ऑफ फीजी**

  इसकी स्थापना की आयोजना सन् 2000 में की गई, उस समय मैं शिक्षा मंत्रालय के साथ कार्यरत थी। उसी समय इसकी स्थापना की गई। यह एक रजिस्टर्ड बॉडी है –

  हिंदी टीचर्स असोसिएशन ऑफ फीजी - नेशनल बॉडी
  हिंदी टीचर्स असोसिएशन - पश्चिमी विभाग
  हिंदी टीचर्स असोसिएशन - उत्तरी विभाग
  हिंदी टीचर्स असोसिएशन – केंद्रीय विभाग

सभी अध्यापकों के लिए कार्यशाला आयोजित करना, हिंदी संबंधित मुख्य बातों पर विचार-विमर्श करना, हिंदी दिवस का आयोजन करना आदि। हिंदी सॉफ्टवेयर, हिंदी टाइप सेटिंग की योग्यता उपलब्ध कराने में इस संस्था ने बहुत सहयोग दिया है।

- **आर्य प्रतिनिधी सभा ऑफ फीजी**
  दयानन्द जी के सिद्धांतों और वैदिक सिध्हांतों पर आशारित होने के कारण संस्कृत और हिंदी भाषा की उन्नति आर्य समाज के नियमों में एक मुख्य नियम है। सन् 1804 में फीजी में सत्य सनातन वैदिक संस्कृति का झंडा लहराया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्राइमरी, सेकेंडरीरे स्कूल और यूनिवर्सिटी, मेडीकल, लॉ स्कूल भी हैं। इन सभी में हिंदी पढ़ाने की व्यवस्था है।
- **सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा ऑफ फीजी–** हिंदी की प्रगति के लिए वचनबद्ध है
- **फीजी सेवा आश्रम संघ, फीजी–** हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में लगी संस्था है।
  स्कूली बच्चों के लिए कविता पाठ, रामायण पाठ, लेखन, भाषण और अन्य अनेक प्रतियोगिताएँ आयोजित ककरना, संस्कृत-हिंदी कक्षाएँ आयोजित करना आदि।
- **भारतीय दूतावास, फीजी –** हिंदी के प्रचार-प्रसार में बहुत बड़ा सहयोग प्रदान करता है। हिंदी पुस्तकों का वितरण, कार्यशालाओं के आयोजन में सहयोग देना आदि।
- अन्य धार्मिक संस्थाएँ, यू.एन.डी.पी. आदि भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना सहयोग दे रही है। गुजरात संस्था, सिक्ख संस्था, संगम संस्था, कबीर पंथी, वहाई धर्म, ऐसी अनेक भारतीय मूल की संस्थाएँ भारतीय संस्कृति, हिंदी भाषा को फीजी में कायम रखे हुईं हैं।

फीजी के जानेमाने हिंदी साहित्यकार, लेखक-लेखिका

- आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी ने 1927 में पंडित अमीकन्द्र विद्यालंकार जी को, फीजी में भाषा और संस्कृति के प्रचार और प्रसार के लिए फीजी बुलाया था। 1935 में पं. अमीचन्द्र जी ने स्कूलों में हिंदी पढ़ाने के लिए छः पोथियाँ (हिंदी की पहली, दूसरी, नवीन तीसरी, चौथी, पाँचवी, छठवीं) लिखी थीं।
- 1970s में शिक्षा के क्षेत्र में फिर बदलाव आया और हिंदी पुस्तकों का पुनः अवलोकन करते हुए नई पाठ्य पुस्तकें लिखी गईं – मेरी महली पुस्तक से लेकर छठी पुस्तक तक लिखी गईं।
- 2009 से हिंदी पाठ्यक्रम में बदलाव के कारण ऐसी शिक्षण-नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हो, ताकि बच्चे बेझिझक होकर स्वयं को अभिव्यक्त करने का आत्मविश्वास रख सकें। ये पुस्तकें वर्तमान में स्कूलों में चल रही हैं – शाश्वत ज्ञान 1-4।

- फीजी में हिंदी क पाठ्यक्रम में संस्कृति शिक्षा को विशेषकर जोड़ा गया है। पाठ्यक्रम में सांस्कृतिक अध्ययन जोड़ने के लिए पुस्तकें लिखी हैं जो कि फीजी में हिंदी के पाठ्यक्रम के साथ जुड़ी हुई हैं। ये हैं –

  सांस्कृतिक और नैतिक शिक्षा– प्राइमरी स्कूल, कक्षा पाँच उअर छः के बच्चों के लिए

  संस्कृति और मानव धर्म– प्राइमरी स्कूल, कक्षा सात और आठ के बच्चों के लिए

- **श्रीमान कंवल जी ने 1976 में लेखन कार्य शुरु किया।** कई उपन्यास, कहानी पुस्तकें लिखीं, जिनमें से कुछ फीजी के हिंदी पाठ्यक्रम में लगी हुई हैं – **सवेरा, धरती मेरी माता, करवट, हम लोग, सात समुंद्र पार, कुछ पत्ते कुछ पंखुड़ियाँ ।**

- **श्रीमती अमरजीत कंवल** ने फीजी की गिरमित समस्याओं को लेकर कविता-संग्रह की रचना की। **चलो चलें उस पार, उपहार, स्वर्णिम साँझ** – इसके लिए इन्हें प्रवासी भारतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

- अन्य लेखक – **पंडित कमला प्रसाद– 'मुल्क की रचनाएँ'**

- **पंडित प्रताप चन्द्र – प्रवासी भजनांजली** , इस तरह बहुत सारा ल्खन कार्य किया गया पर दुर्भाग्यवश अधिकंशतः छप न सका।

- **गिरमिट कालीन फीजी की दर्द भरी रचना के कुछ उदाहरण-**

  नगोना हम से छूटे न प्यारी,
  देस छूटा जात छूटी,
  छूटी बाप महतारी,
  नगोना हम से छूटे न प्यारी,
  इस टापू का भाँग नगोना,
  पी के रात गुजारी,

  दूसरी रचना –

  सतियों का धर्म डिगाने को जब,
  अन्याईयों ने कमर कसी,

जल अगम में कुंती कूद पड़ी,
पार बही मझधार नहीं।

अत्याचार की चक्की में,
पिस कर धर्म नहीं छोड़ा,
हिन्दूपन अपना खो बैठें,
भारत के वीर गंवार नहीं।

इस पतन का कुछ तो यंत करो,
हर कुंती का जीवन सफल रहे,
बिन धर्म धारण किए,
सुख शांति का संचार नहीं।

फीजी में मानक हिंदी, जिन कुनौतियों का सामना कर रही है, वे हैं

- आधुनिक तकनीकी – फेसबुक, चैट, ईमेल आदि के आकर्षण के कारण मातृभाषा के प्रति, युवाओं की बढ़ती हुई अरूचि।

- मातृभाषा और धर्म के प्रति बढ़ती हुई युवा वर्ग की अरूचि का कारण है कि वह यह सोचता है कि विदेश जाने पर हिंदी भाषा का कोई महत्व नहीं रह जाता है। शिक्षा को केवल धन कमाने का माध्यम समझने के कारण मातृभाषा के प्रति अरूचि बढ़ रही है।

- माता-पिता के बदलते ख्याल, आधुनिकता की ओर झुकाव है।

- पाठ्यक्रम में मानक हिंदी के स्थान पर फीजी हिंदी लाने के कुछ असफल प्रयास।

- देवनागरी लिपि का स्थान रोनम लिपि ले रही है। परिणामतः हिंदी ध्वनियों का लोप हो रहा है।

प्रधान हिंदी टीचर्स असोसिएशन ऑफ फीजी (National Body)
48 Namena Road, Nabua, Suva
PO Box 11440, Suva
PO Box 3400, Lautoka
mrsramrakha@gmail.com